04– चतुर्थ बी. वाई. एन. एस. परीक्षा

04–01 आहार एवं पोषण विज्ञान

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) **अंक – 100** **कालांश – 90**

– शरीर पोषण, पंचमहाभूतनुसार विविध आहार द्रव्य, रसानुसार आहार द्रव्योत्पत्ति, आहार द्रव्यों के घटक एवं उनके गुणकर्म

– आहारविधि – आहारविधि विशेषातयन, पथ्यापथ्याहार, भोजन पाचन अवधि, आहार के दुष्परिणाम जन्य रोग, संतर्पण–अपतर्पण निमिन्तज व्याधियां ।

– आहार का प्रमाण एवं पोषण – भोजन के आवश्यक अवयव, आदर्श भोजन, मात्रा, वय : व्यवसाय गर्भिणी बाल भेद से भोजन की मात्रा।

– प्रोटीन, शर्करा, वसा, खनिज, लवण, जीवनीय तत्वों का आहार प्रयोजन उनकी दैनिक मात्रा।

– पोषणाभाव जन्य व्याधियां।

– पोषण विषयक राष्ट्रीय कार्यक्रम।

– शाकाहार – मांसाहार के गुणावगुण, मांस सेवन जन्य व्याधियां, दुग्धाहार–फलाहार का महत्व, भोजन में मसालों की उपयोगिता, हीनाति मात्र दोष।
– आहार परिणाम कर भाव।
– आहार द्रव्य वर्गों का परिज्ञान।
– स्वस्थ एवं आतुर अवस्था में पथ्य–अपथ्य का महत्व।

प्रायोगिक परीक्षा **अंक – 100** **कालांश – 60**

– आतुरालय में पथ्य निर्माण अवलोकन, क्षेत्र में जाकर स्वास्थ्य परीक्षण एवं पोषणाभाव जन्य अवस्था का ज्ञान, विभिन्न पथ्य निर्माण कल्पनाओं का अभ्यास।

संदर्भ ग्रन्थ –

– चरक, सुश्रुतादि संहिताओं के उपयोगी अंश, स्वस्थ्यवृत्त विषयक पुस्तकों से सम्बन्धित अंश, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन, हैदराबाद से प्रकाशित प्रकाशन।

04–02 प्रसूति एवं स्त्री रोग चिकित्सा

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) **अंक – 100** **कालांश – 90**

– स्त्रीशरीर विज्ञान – स्त्री शरीर के विशेष प्रजनन अवयव श्रोणिः, आशयः, योनिः, पेशी–स्त्रोतस्, स्तनं, धमनी, गर्भ, प्रकृति एवं विकृति परक वर्णन।
– रजो विज्ञान – स्त्री शुक्र रजः, ऋतुकालः, ऋतुमती, रजप्रवृत्तिः, प्रमाण, स्वरूपं, कार्य।
– गर्भ विज्ञान – गर्भ आकृति, मासानुमासिकवृद्धि, गर्भपोषण, अपरानिर्मितिः, नाभिनाड़ी, आसन आदि का वर्णन।
– गर्भिणी विज्ञान – गर्भिणी परिचर्या, स्वास्थ्यपरिचय, आहार–विहार व दिनचर्या।
– प्रसव विज्ञान – परिभाषा, अवधि, लक्षण, अवस्था, प्रसव क्रम, सूतिकागारम्, प्रसवकालावस्था, जातमात्र परिचर्या, नवजात शिशुचर्या।
– स्त्रीरोग – कृच्छार्तवः, रक्तप्रदर, योनिव्यापद्, स्तनकीलक, स्तनार्बुद, स्तनविद्रधि, उत्तरवस्ति, पिचु वर्ति प्रयोग आदि।
– योन संक्रमण जन्य व्याधियां ।

प्रायोगिक परीक्षा **अंक – 100** **कालांश – 60**

– प्रसवदर्शन न्यूनतम दस प्रसवों का अभ्यास, स्त्री रोग सम्बन्धी दस स्त्री आतुरों का इतिवृत पत्रक निर्धारण, गर्भनिरोधक विधियों का ज्ञान, विभिन्न यन्त्र उपकरणों का परिचय एवं प्रयोग परिज्ञान।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रसूति विज्ञानम् – आचार्य रमानाथ द्विवेदी, 2. अभिनव प्रसूति तंत्रम् – वैद्य दामोदर शर्मा गौड़,
3. स्त्रीरोग विज्ञानम् तंत्रम् – वैद्य रमानाथ द्विवेदी, 4. टेक्स्ट बुक आफ गायनाक्लोजी – सी.एस.डान
5. टेक्स्ट बुक आफ आब्स्टैट्रिक – सी.एस.डान

04–03 योग एवं रोग उपचार

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) **अंक – 100** **कालांश – 90**

– रोग मुक्ति में आसन, प्राणायाम, ध्यानादि विधियों का महत्व, प्राण शक्ति वर्द्धन में बन्ध, मुद्रा, त्राटकादि क्रियाओं का योगदान, पाचन तंत्र विकृतियों के उपचार में षट् क्रियाओं की उपयोगिता, अस्थि संस्थान, अन्तःस्त्रावी प्रणाली, स्नायु तंत्र, श्वसन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, हद्य एवं रक्तवाहिकाओं की विकृतियां, प्रजनन तंत्र पर योग क्रियाओं का प्रभाव, जत्रूर्ध्व व्याधियों में योग क्रियाओं का प्रभाव, ध्यान विधियों का मनोदैहिक प्रभाव, शिथिलिकरण क्रियाओं का तकनीकी ज्ञान, योग का मानसिक भावों पर प्रभाव – व्यक्तित्व, व्यवहार, संवेदना, आत्मनियंत्रण, स्वसम्मोहन, अनुशासित जीवन विधि ज्ञान, योग विधियों से तनाव प्रबन्धन, मधुमेह, श्वास, स्थौल्य, अनिद्रा आदि व्याधियों का योग क्रियाओं से निवारण।

प्रायोगिक परीक्षा **अंक – 100** **कालांश – 60**

– योगविधियों का सांख्यिकी पद्धति से विश्लेषण, जन–स्वास्थ्य शिक्षा हेतु चार्ट्स–पोस्टर्स निर्माण, योग–केन्द्र/चिकित्सालय में आतुरों को योग क्रियाओं की विधियों का परिज्ञान एवं प्रभाव आंकलन।

संदर्भ सूची –

– योग से सामान्य व्याधियों का उपचार – स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– यौगिक थैरेपी – डॉ. विनेकर, भारत सरकार का प्रकाशन

– योग निद्रा – स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

– योग केन्द्र लोनावाला, मुंगेर तथा सी.सी.वाई.एन. का प्रकाशन।

04–04 जल एवं मृतिका उपचार

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) **अंक – 100** **कालांश – 90**

– जल चिकित्सा का परिचय एवं इतिहास, जल के भौतिक एवं रासायनिक गुणों का ज्ञान, जल चिकित्सा का शरीर क्रियात्मक प्रभाव – त्वचा, श्वसन, रक्त संवहन एवं तंत्रिका तंत्र पर जल एवं ताप का प्रभाव, जल का विभिन्न तीव्रव्याधियों में महत्व, जीर्ण व्याधियों में जल तत्व का महत्व, जल चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्त, जल का चिकित्सा परक प्रयोग विधि, रक्ताल्पता, आमवात, मधुमेह, श्वास, हृदय एवं वृक्क विकारों में जल चिकित्सा का महत्व, जल स्नान की विभिन्न विधियॉं, जल द्वारा शीत एवं उष्ण डूशेज विधियों का ज्ञान, जल की बाह्य एवं आभ्यंतरिक प्रयोग विधियॉं, जल मृतिका (मड थेरेपी) उपचार पद्धति का परिज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा **अंक – 100** **कालांश – 60**

– जल एवं मृतिका चिकित्सा का 20 आतुरों पर विभिन्न व्याधियों में प्रयोग परक पंजिका संधारण।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

– Baths : By S.J. Singh

– My Water Cure : By Scbastian Kneipp

– Rational Hydrotherapy : By Dr. J.H. Kellogg

– The Healing Clay : Michel Abserra

– Our Earth and Cure : Raymond Dextroit

04–05 भौतिक चिकित्सा

सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र – 1 (एक) **अंक – 100** **कालांश – 90**

– भौतिक चिकित्सा परिचय, भौतिक चिकित्सा के यांत्रिक सिद्धान्त – बल, गुरूत्वाकर्षण का शरीर पर प्रभाव, लिवर, स्प्रिंग, दोलक के प्रयोगों का ज्ञान, व्यायाम चिकित्सा का परिचय, प्रारम्भिक स्थिति – व्यायाम चिकित्सा से पूर्व मांस पेशीयों की स्थिति का ज्ञान, एच्छिक एवं स्वेच्छिक गतियों का परिचय एवं ज्ञान, मांस पेशीयों की रचना, स्थान, क्रिया एवं प्रकार परिज्ञान, संधियों के प्रकार, स्थान एवं गति का ज्ञान, शिथिलीकरण विधियों का ज्ञान।

प्रायोगिक परीक्षा **अंक – 100** **कालांश – 60**

– 20 आतुरों पर भौतिक चिकित्सा की विभिन्न विधियों से उपचारात्मक प्रबन्धन एवं पंजिका संधारण।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

– Principles of Excreise Therpay by Dena Gardiner

– Tidy Physiotherapy

– Clayton's Electrotherapy and Actinotherapy